अध्यक्ष, एईआरबी का गणतंत्र दिवस संबोधन (26-01-2023)

“उपस्थित प्रियजन, क्षेत्रीय नियामक केंद्र (आरआरसी), एसआरआई और विभिन्न साइटों पर हमारे साइट पर्यवेक्षक, सुरक्षा, कैंटीन और हाउसकीपिंग स्टाफ; आज़ादी के अमृत काल में 74वें गणतंत्र दिवस पर आप सभी को नमस्कार एवं हार्दिक शुभकामनाएं। 1950 में इसी दिन भारत ने अपने आप को सबसे बड़े लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में घोषित किया था और 'हम लोगों' ने स्वयं को एक ऐसा संविधान दिया था जो हमारे एक सामूहिक स्वप्न से प्रेरित था। हमारे लोकतंत्र की विविधता और जीवंतता की पूरे विश्व में सराहना की जाती है। एकता की इसी भावना एवं एक राष्ट्र की अनुभूति को हम हर वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

भारत का संविधान 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा अधिनियमित और अपनाया गया था, जिसे हम संविधान दिवस के रूप में मनाते हैं। इसे इसके दो महीने बाद प्रभावी किया गया था। यह 1930 के उस दिन को चिह्नित करने के लिए किया गया था जब भारत ने पूर्ण स्वतंत्रता - 'पूर्ण स्वराज' का संकल्प लिया था। 1930 से 1947 तक, हर साल 26 जनवरी को 'पूर्ण स्वराज दिवस' के रूप में मनाया जाता रहा था, जिसके फलस्वरूप इसी दिन को संविधान लागू करने के लिए चुना गया था।

संविधान हमारे देश का सर्वोच्च कानून है जो सूक्ष्म स्तर पर सरकार के कामकाज के लिए वृहद ढांचे को दर्शाता है। यह शासन के विभिन्न अंगों की सीमाएँ निर्धारित करता है, एवं अधिकारों और कर्तव्यों का निर्धारण करता है। देश के सरकारी और कानूनी ढांचे का निर्माण संविधान के मूल ताने-बाने से ही होता है।

हमारा संविधान कठोरता (दृढता) और लचीलेपन का एक दुर्लभ मिश्रण है, जिसने देश के अपने जीवनपथ को आकार देने और बदलते समय के अनुसार कानून बनाने की अनुमति दी है। ऐसे कानून का उपयोग करते हुए ही, हमारे संगठन, परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद की स्थापना 1983 में की गई थी। एईआरबी ने समयानुसार विकसित होकर खुद को एक सक्षम और

परिपक्व नियामक के रूप में स्थापित किया है। सीएनएस समीक्षा बैठक के लिए देशों के समूह के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित होना, ओईसीडी-एनईए समितियों - सीएनआरए और सीएसएनआई की भागीदारी में पदोन्नति, और हाल ही में संपन्न आईआरआरएस अनुवर्ती मिशन की टिप्पणियां इसका प्रमाण हैं।

एईआरबी ने अपने कार्यालय के कामकाज को सुचारु रूप से नियंत्रित करने के लिए एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) लागू की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। आईएमएस हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न स्तरों पर प्रक्रियाओं को तैयार करने के लिए लचीलापन भी प्रदान करता है। हालांकि हमें लचीलेपन का सही अर्थ समझने की जरूरत है । लचीलेपन का अर्थ है - मूल सिद्धांतों, नैतिकता और मूल्यों को मद्देनजर रखते हुए कई विकल्प प्रदान करना, जिसे हम दृढ़ता और लचीलेपन का दुर्लभ मिश्रण कह सकते हैं। लचीलापन जवाबदेही के प्रावधान को बरकरार रखता है। पूर्ण 360 डिग्री स्वतंत्रता में कोई भी मनमर्जी से निर्णय ले सकता है, बिना किसी उत्तरदायित्व के, जो कि सिस्टम के लिए उचित नहीं माना जा सकता ।

वर्तमान में एईआरबी अपनी नियामक प्रक्रियाओं में सामंजस्य स्थापित कर इन्हें और अधिक कुशल एवं प्रभावी बनाने के लिए प्रयासरत है। इस संबंध में विनियामक आवश्यकताओं और मार्गदर्शन कार्रवाइयों के बीच सामंजस्य, तकनीकी पहलुओं के अलावा मानव और संगठनात्मक कारकों में कर्मचारियों की क्षमता को बढ़ाना, आंतरिक समीक्षाओं की भूमिका बढ़ाने के लिए समीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सुधार, परमाणु सुरक्षा पहलुओं का एकीकरण, संबंधित संरक्षा मुद्दों के महत्व के अनुसार नियामक प्रक्रियाओं में श्रेणीबद्ध दृष्टिकोण के अनुप्रयोग पर अधिक जोर देना इत्यादि, शामिल हैं। इसके अलावा एईआरबी की श्रेणीबद्ध दृष्टिकोण (GRADED APPROACH), बॉटम- अप मैकेनिज्म (नीचे से ऊपर) का अनुसरण करते हुए, परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) को उच्च स्तरीय कानूनों के संशोधन में श्रेणीबद्ध दृष्टिकोण प्रक्रिया सम्मिलित करने के लिए भी आवश्यक फीडबैक उपलब्ध कराती है। एईआरबी अपने हितधारकों के विचारों और चिंताओं को जानने व समझने के लिए औपचारिक मंच/अवसर प्रदान करने के लिए भी कदम उठा रहा है। नियामक दस्तावेजों के विकास में पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से, हितधारकों और जनता की टिप्पणियों के लिए सुरक्षा कोड दस्तावेज वेबसाइट पर अपलोड किए जाते हैं, जिन्हें जारी करने से पहले उचित रूप से संबोधित किया जाता है।

हमारी वेब साइट पर परमाणु संयंत्रों के प्रमुख चरणों की एईआरबी द्वारा दी गई सहमति भी डाली जा रही है।

नियमन का दायरा बढाने के लिए, एईआरबी ने अपनी नियामक गतिविधियों का विकेंद्रीकरण किया है और चेन्नई, कोलकाता और नई दिल्ली में क्षेत्रीय नियामक केंद्र स्थापित किए हैं। एईआरबी ने अपनी नियामक निरीक्षण पद्धति में भी संशोधन किया है। निरीक्षण की आवृत्ति अब संरक्षा समीक्षा, घटना की रिपोर्टिंग, हितधारकों से प्रतिक्रिया के आधार पर तय की जाती है। निरीक्षणों के दौरान की गई टिप्पणियों की निर्दिष्ट विनियामक आवश्यकताओं के साथ पुष्टि की जाती है और इन्हे श्रेणीबद्ध किया जाता है।

एईआरबी विनियमित सुविधाओं में स्व-नियामक तंत्र के बारे में जागरूकता फैलाने और उन्हें प्रभावित करने के उद्देश्य से नियामक निरीक्षणों का उपयोग 'जागरूकता सेवा' मिशन के रूप में कर रहा है। नियामक का ध्यान अब केवल अनुपालन निगरानी के बजाय लाइसेंसधारी संगठन / सुविधा द्वारा स्व-विनियमन और संरक्षा मुद्दों के स्वपालन पर अधिक है।

एईआरबी द्वारा हाल ही में लागू किया गया एक बड़ा बदलाव आपातकालीन तैयारी और प्रतिक्रिया के क्षेत्र में है। आपातकाल के प्रारंभिक चरण के दौरान ऑपरेटर की प्रतिक्रिया पर अधिक जोर दिया जा रहा है, जो कि महत्वपूर्ण है। अद्यतन कार्यप्रणाली के अनुसार, आपातकालीन स्थिति के दौरान निर्णय लेने की जिम्मेदारी अब संयंत्र प्रबंधन की है, जो विभिन्न संयंत्रों और पर्यावरणीय मापदंडों के तकनीकी मूल्यांकन पर आधारित है। जैसा कि संयंत्र प्रबंधनों द्वारा सूचित किया गया है, आपातकालीन प्रतिक्रिया संबंधित कार्यों का कार्यान्वयन जिला अधिकारियों के दायित्व में आता है। इस मॉडल को संबंधित एनपीपी साइटों की जिला आपदा प्रबंधन योजनाओं में सम्मिलित किया गया है।

विनियामक इंटरफेस को सुव्यवस्थित करने और 'अधिकतम शासन और न्यूनतम सरकार' पर सरकार की पहल की दिशा में, एईआरबी विकिरण संरक्षा से संबंधित मामलों में निर्बाध विनियमन के लिए विभिन्न अंतर-मंत्रालयी समन्वय गतिविधियों में शामिल है। व्यवसाय करने में आसानी के लिए, एईआरबी राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (एनएसडब्ल्युएस) पर सरकार की पहल का सक्रिय रूप से समर्थन कर रहा है और अधिकतम शासन की दिशा में आगे बढते हुए अपने नियामक तंत्र के सरलीकरण की प्रक्रिया में है। यह संरक्षा से संबंधित मामलों में

तकनीकी सहयोग बढ़ाने के लिए अपने मजबूत द्विपक्षीय संबंधों का उपयोग करना जारी रखे हुए है।

अपने हितधारकों के बीच संरक्षा जागरूकता बढ़ाने के लिए, एईआरबी ने अपने सार्वजनिक जनजागरण (आउटरीच) कार्यक्रमों, इच्छुक पार्टियों के लिए संरक्षा प्रचार गतिविधियों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों के प्रशिक्षण आदि को बढ़ावा दिया है। ज्ञान प्रबंधन गतिविधियों को बढ़ाने के लिए एईआरबी द्वारा वेबिनारों की अवधारणा और आयोजन की श्रृंखला के जरिए महत्वपूर्ण अतीत की घटनाओं के समय की परिचालन अनुभव प्रतिक्रिया साझा करना और इन्हें भविष्य की पीढ़ी के लिए संग्रहित करने का भी कार्य किया है। इसके अलावा, एईआरबी के अपने आंतरिक कर्मचारियों द्वारा समीक्षा पर अधिक जोर देने के साथ साथ इसे अधिक समावेशी और सहभागी बनाकर नियामक निर्णय लेने की प्रक्रिया को मजबूत किया गया है।

एईआरबी के इन सभी प्रयासों को आइएईए की आइआरआरएस टीम के अनुवर्ती मिशन के दौरान स्वीकार किया गया है और टीम ने एईआरबी को उसके व्यावसायिक दृष्टिकोण के लिए बधाई भी दी है।

उपलब्धियां और अधिक उम्मीदें पैदा करती हैं और अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने और आगे बढ़ने के लिए निरंतर प्रयासों की मांग करती हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, स्वदेशी पीएच्डब्ल्युआर के फ्लीट मोड, आयातित विदेशी डिजाइन रिएक्टरों और लघु और मॉड्यूलर रिएक्टरों (एसएमआर) को तैनात कर ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर विस्तारित करने की योजना है। भारत सरकार कार्बन के शुद्ध शून्य उत्सर्जन के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के दिग्गजों को शामिल करने का भी इरादा रखती है। आने वाले दिनों में, पीपीपी मोड के अंतर्गत विकिरण औषधि के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए गैर-विद्युत रिएक्टरों की तैनाती करने की योजना है । विकिरण प्रौद्योगिकियों का भी तेजी से विकास हो रहा है, चाहे वह हैड्रॉन आधारित कैंसर थेरेपी हो या फिर लिनैक (LINAC) आधारित विकिरणक या एक्सरे आधारित औद्योगिक रेडियोग्राफी उपकरण।

यह समय एईआरबी में सभी के लिए कमर कसने और दृढ़ संकल्प के साथ बढ़ती चुनौतियों का सामना करने का है। समय की मांग है कि सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर और अविचलित संकल्प के साथ संरचित दृष्टिकोण का पालन करना, जो एकीकृत प्रबंधन प्रणाली (आईएमएस) के माध्यम से पहले से ही स्थापित है।

मुझे एईआरबी में मेरे सभी सहयोगियों और कर्मचारियों पर पूरा विश्वास है कि वे एईआरबी के झंडे को ऊंचा रखेंगे और उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत रहेंगे, एवं इसी तरह हमारे राष्ट्रीय ध्वज को ऊंचा रखने में योगदान करते रहेंगे।

मैं उन महान स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हुए और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपना संबोधन समाप्त करता हूं, जिनके महान बलिदानों से हमें आजादी मिली और हर साल ये दिन मनाने का अवसर मिला।“

जय हिन्द।

गार्ड ऑफ ऑनर प्राप्त करते हुए एईआरबी अध्यक्ष

अध्यक्ष, एईआरबी के साथ एईआरबी स्टाफ